वर्ष - 2

अंक - 9

धार्मिक त्रैमासिक बाल पत्रिका

चहकती चेतना

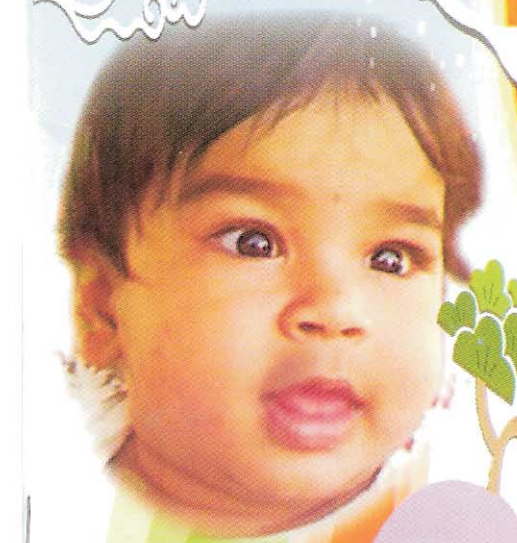

प्रकाशक : आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

अरिहंत

सिद्ध

आचार्य

उपाध्याय

हमारे आराध्य नवदेव

पूज्य नवदेवताओं के क्रम में
आठ देवताओं के
बारे में पढ चुके हैं।
इस अंक में पढिये अंतिम देव
जिनधर्म के बारे में –

जिनधर्म

साधु

जिनबिम्ब

जिनवाणी

जिनमंदिर

जिनधर्म अर्थात् हमारा महान जैन धर्म। इस जैन धर्म के आधार से ही आठों देव हैं। जैन धर्म ही वह धर्म है जो वस्तु की सच्ची बात करता है। जैन धर्म जगत का एकमात्र धर्म है जो प्रत्येक जीव को भगवान बनने का मार्ग दिखाता है। इसी धर्म का आश्रय लेकर प्राणी पूर्ण सुखी हो सकता है।

हमें हमेशा अपने महान जैन धर्म का आदर करना चाहिये।

एक थी पिन्की प्यारी

– ब्र. सुमतप्रकाशजी, खनियांधाना म.प्र.

एक थी पिन्की प्यारी
सबको लगती प्यारी,
दादी को पानी देती,
दादा की सेवा करती
सदा समय पर पढ़ती,
काम में हाथ बंटाती,
उसे देख सब होते खुश,
पैसा पाकर वह भी खुश,
पिन्की गई पाठशाला,
ली बालबोध पाठमाला,
पिन्की गई फिर मंदिर,
स्तुति पढ़ी इक सुन्दर,
हाथ में अरघ धर के,
प्रभु दर्शन करके जिन दर्शन,
यों करके सम्यकदर्शन लीना ।।

दुख से मुक्ति

कौआ बोला काँव-काँव जाऊँ तो मैं जाऊँ कहाँ,
बिल्ली बोली म्याऊँ-म्याऊँ कितने दुख पाये यहाँ।
चेतन राजा बतलाओ दुख से मुक्ति दिलवाओ,
चेतन राजा बोला जिनवाणी को खोला।
अपना आतम जानो निज में ही सुख मानो,
पाप भाव को त्यागो अपने में ही लागो,
दुखों से मुक्ति पाओगे सिद्धपुरी को जाओगे।

- विराग शास्त्री

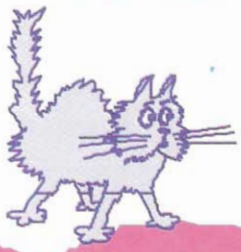

गुटखा ने राजा से रंक बना दिया उसे –

जिंदगी जीने के हर किसी के अपने तरीके होते हैं। मनोज ठाकुर अपनी जिंदगी को 'गुटखे, के सेवन से जीते थे। यही 'गुटखा' बाद में उनके लिए इतना भारी पड़ गया कि इसने उनकी शक्लोसूरत से लेकर उनकी पूरी जिंदगी को चौपट कर दिया। कभी राजाओं की जिंदगी जीने वाले मनोज ठाकुर 'गुटखे' के कारण आज रंक का जीवन जी रहे हैं।

मुंबई निवासी 40 वर्षीय मनोज 'गुटखे' से बर्बाद हुई अपनी जिंदगी की जब आप बीती बताते हैं, तो उनकी आंखे भीग जाती हैं। मनोज के अनुसार उन्हें 'गुटखे' की आदत कालेज के दिनों से लग गयी थी। 'हिंदुजा कालेज' में जहां वे पढ़ते थे, अपने दोस्तों, साथियों की संगति में उन्हें 1971 से 'गुटखा' खाने की शुरुआत की और बाद में उन्हें इसकी ऐसी लत लगी कि फिर बस वह 'गुटखामय' ही हो गये। सुबह उठने से लेकर रात सोने तक गुटखा ही उनका भोजन बन गया। भले ही उनकी यह आदत उनकी जेब पर कितनी ही भारी क्यों न पड़ रही हो।

मनोज के अनुसार उन्होंने गुटखे से होने वाले संभावित अंजाम की कभी कल्पना ही नहीं की थी, इसलिए दिसंबर 16 में उन्हें दातों में जब खासी तकलीफ महसूस हुई, तो उन्होंने स्वप्न में भी कभी नहीं सोचा था कि इसका कारण 'गुटखा' हो सकता है। पर नालासोपारा में दांत के डॉक्टर को यही शक था। 'उसने फौरन मुझे नायर अस्पताल की डेंटिस्ट डॉ. पारिख से मिला, तो उन्होंने मुझे देखते ही टाटा अस्पताल के डॉ. जे.जे. व्यास के पास फौरन जाने को कहा।' मनोज के अनुसार टाटा अस्पताल का नाम सुनते ही मेरे होश उड़ गये। मैं समझ गया कि मुझे क्या

बीमारी है संभवतः डॉ.व्यास से मिलकर इसकी पुष्टि हो गयी कि मुझे गले का कैंसर है, उसका मुख्य कारण है गुटखा, पर उन्होंने कहा कि इस कैंसर को जड़ से हटाया जा सकता है, यदि मैं फौरन आपरेशन करवा लूँ हाँ ! इसमें मेरे मुंह और गले का काफी हिस्सा काटना पड़ेगा। मनोज ने 'हां' बोल ही दी। इस 'हां' से पहले जैनिक प्रेस लिमिटेड में मार्केटिंग मैनेजर की नौकरी छोड़ दी।

28 फरवरी 1997 से 16 दिसंबर 1997 तक तीन बार आपरेशन और प्लास्टिक सर्जरी हुई जिसमें उनका लगभग 70,000 रुपये से ज्यादा खर्च हो गया। इस आपरेशन से उनकी जिंदगी तो बच गयी, पर इसके बाद कोई महत्वपूर्ण नौकरी उन्हें नहीं मिली, क्योंकि उनकी शक्ल–सूरत देखकर लोग मना कर देते हैं। अंततः टाटा वालों ने उन्हें सहयोग किया और अपने 'कैंसर पेसेंट्स एवं एसोसिएशन में रख लिया। यहां दवाई और दूध, बिस्किट के अलावा उन्हें 1000 रुपये प्रतिमाह भी मिलता है। मनोज बहुत तड़पते हुए कहते हैं , आज मेरा वेतन प्रति दिन के हिसाब से 33 रुपये 33 पैसे है और इसका सिर्फ एकमात्र कारण है – गुटखा।'

खराब आदतों के कारण मनोज ने बहुत सबक लिये हैं। अब वह नहीं चाहते कि 'गुटखे' से जो कुछ उन्हें भुगतना पड़ा, वह किसी और को भी भुगतना पड़े, इसलिए जब वह किसी को गुटखा खाते देखते हैं, तो उसे अपनी शक्लोसूरत दिखाकर रोकते, टोंकते हैं। यही नहीं, 'गुटखा' से होने वाले दुष्परिणामों के प्रति लोगों को जागरुक करने के लिए उन्होंने कई लोगों के आर्थिक सहयोग से पोस्टर भी तैयार किये हैं, जिसे वह जगह–जगह लगाते हैं।

यदि आप गुटखा खाते है तो अब आप ही सोचिये कि क्या आपको अपना भविष्य दिखाई दे रहा है या नहीं।

– नवभारत टाइम्स दिल्ली से आभार

महान नारियाँ

1– वह कौन सी नारी थी जिसके शील के प्रभाव से अग्नि कुण्ड जल कुण्ड में परिवर्तित हो गया था ?
– सीता सती

2– वह कौन थी जो जटायु पक्षी को सुबह, दोपहर, शाम के समय पंचमेष्ठियों को नमस्कार कराती थी?
– सती सीता

3– वह कौन थी जिन्होंने सीता सती को आर्यिका दीक्षा दी थी ?
– पृथ्वीमति माताजी।

4– वह कौन थी जिनके शील के प्रभाव से देवों का विमान रुक गया था?
– प्रभावती

5– वह कौन थी जिन्होंने कुन्दकुन्द जैसे महान पुत्र को जन्म दिया था?
– कुन्दलता

6– वह कौन थी जो राजकुमार ऋषभदेव आदिनाथ की दादी थी ?
– इन्दुरेखा

7– वह कौन थी जिन्होंने प्रतिज्ञा ली थी कि जब तक बाहुबली की प्रतिमा श्रवणबेलगोला में नहीं बन जायेगी तब तक मेरा दूध का त्याग है?
– कालवा देवी (चामुण्डराय की माता)

8– वह कौन थी जो जिनेन्द्र भगवान की पूजा करते समय पूजन में गज मोती चढाती थी?
– मनोवती

9– वे कौन थीं जिनसे रावण की 48000 हजार रानियों ने आर्यिका दीक्षा ली थी?
– शशिकांता आर्यिका

10– वह कौन थीं जिन्होंने अपनी होने वाली सास को दीक्षा दी थी ?
– राजुलमति

मुक्तक

1. नव वर्ष की नव उमंग का जीवन में संचार करो
नवल वर्ष के नव प्रभात का अभिनन्दन स्वीकार करा ।।

2. मोह की कालिमा में सारा जग रोया है,
कषाय की कालिमा से मन को भिगोया है।
कर्मों की लिपि कोई न पढ पाया,
जीवन के अंत में रावण तक रोया है।।

अक्षत अनिल मोदी, नागपुर

3. शहर जायेंगे तो सड जायेंगे, गांव जायेंगे तो गुम जायेंगे।
वन जायेंगे तो बन जायेंगे, स्वयं में जायेंगे तो तिर जायेंगे।।

4. जो दूसरों का सता सता कर मिले वह सत्ता है।
और जो स्वयं को तपा कर मिले वह सत्य है।।

अभिषेक जैन, बण्डा

5. फूलों से भरे गुलशन वीरान हो गये
गंदे उपन्यास आज पुराण हो गये
अब लोग मंदिर नहीं जाना चाहते
क्योंकि फिल्मी कलाकार आज भगवान हो गये।।

6. बालकों पर ध्यान न दिया तो मंदिर सूने हो जायेंगे
बच्चे न गये पाठशाला तो कौन भक्ति गीत गायेंगे
आज बालकों का धर्म के संस्कार दे दो बन्धुओ
अगर ध्यान न दिया तो इनके जीवन जीवन धूमिल हो जायेंगे।

अनुभव जैन, हटा

7. हंसो जरा जमकर हंसो कि हंसना बाकी न रहे
रोओ जरा जमकर रोओ कि रोना बाकी न रहे
आओ तो ऐसे आओ कि आना बाकी न रहे
जाओ तो ऐसे जाओ कि जाना बाकी न रहे

नितेश सिंगतकर

सभी छात्र श्री महावीर विद्या निकेतन, नागपुर में अध्ययनरत हैं।

अब तक इस कॉलम में सम्यग्दर्शन के आठ अंगों के तीन अंगों के बारे में पढ चुके हैं। अब पढिये चौथे अंग

सच्चा श्रद्धान

अमूढ दृष्टि अंग का अंग का तात्पर्य है अपने श्रद्धान में दृढ़ रहना। जैन धर्म का श्रद्धान करने वाला संकट आने पर भी अपने श्रद्धान को नहीं छोड़ता।

विजयार्ध पर्वत के दक्षिण दिशाा में मेघकूट नाम का नगर था। वहाँ का राजा चन्द्रप्रभ ने अपने पुत्र को राज्य देकर गुप्ताचार्य से क्षुल्लक दीक्षा ले ली। कुछ समय बाद को तप से क्षुल्लक जी को सिद्धि प्राप्त हो गईं। वे क्षुल्लक चन्द्रप्रभ आचार्य से जम्बूस्वामी की निर्वाण भूमि मथुरा जाने की आज्ञा मांगी। आचार्य ने आज्ञा देकर कहा कि वहाँ जाकर सुरत मुनिराज को संदेश देना कि सम्यक्त्वी की शोभा धर्म में दृढ़ रहने से ही है। एक मात्र सच्चे देव पूजन करने योग्य हैं और रानी रेवती को मंगल आशीर्वाद कहना। मगर मथुरा में विराजमान भव्यसेन मुनिराज के लिये कोई संदेश नहीं दिया।

चन्द्रप्रभ मथुरा गये वहाँ विराजमान आचार्य भव्यसेन ने उनसे बात नहीं की। आचार्य भव्यसेन का आचरण जिन धर्म के अनुसार नहीं था।। प्रातः काल के समय आचार्य भव्यसेन शौच क्रिया के लिये जा रहे थे तो उनके मार्ग में क्षुल्लकजी ने विक्रिया से हरी-हरी घास दिखा दी। जिनागम के अनुसार हरी घास पर चलना पाप है। यह जानकर भी भव्यसेन हरी घास पर पैर रखते हुये चले गये। फिर क्षुल्लकजी ने विक्रिया से कमण्डल का पानी गायब कर दिया। यह देखकर भव्यसेन को अत्यंत आश्चर्य हुआ। उन्होंने साफ मिट्टी से अपनी शुद्धि की। यह देखकर क्षुल्लकजी ने उनका नाम अभव्यसेन रख दिया। बाद में सुरत मुनिराज के पास गये तो वे बहुत शांत और सम्यग्दर्शन के धारी थे।

दूसरे दिन रानी रेवती की परीक्षा लेने के उद्देश्य से क्षुल्लकजी ने पूर्व दिशा में पद्मासन मुद्रा में चार मुख वाले ब्रह्मा का रूप दिखाया। इन ब्रह्मा को सत्य समझकर राजा वरुण सहित सारे नगरवासी और आचार्य भव्यसेन भी गये। परन्तु रानी रेवती नहीं गई। सबने उसे बहुत

समझाया और उस ब्रम्हा की महिमा बताई परन्तु रानी का श्रद्धान नहीं डगमगाया। वह सबसे यही कहती रही कि भगवान आदिनाथ को मोक्षमार्ग बताने के कारण आदिब्रह्मा कहा जाता है। कोई दूसरा ब्रह्मा हो ही नहीं सकता। जिनागम में कहा है – नारायण नौ होते हैं, रुद्र ग्यारह होते हैं और तीर्थंकर चौबीस ही होते हैं फिर ये नये देव कौन हैं? यह अवश्य ही कोई मायावी है। मैं इसे किसी कीमत पर वन्दन नहीं करूँगी।

दूसरे दिन क्षुल्लकजी ने नागशय्या पर विराजमान विष्णु भगवान का रूप बनाया। उसके चारों हाथ में शस्त्र थे। सारा नगर फिर दर्शन करने चला गया और बोले कि मथुरा का भाग्य खुला है आज स्वयं भगवान विष्णु पधारे हैं। लेकिन रानी रेवती अपने घर बाहर भी नहीं निकली।

फिर चन्द्रप्रभ ने नया रूप बनाया। उनका बीमारी से शरीर गल रहा था। रानी रेवती के महल के पास जाकर क्षुल्लक जी ने माया से बेहोश होने का भ्रम किया। रेवती रानी को जब समाचार मिला तो उसने आकर भक्तिपूर्वक नमस्कार किया और उन्हें सेवकों से आराम से उठवाकर ले आई। महल में उनका इलाज करवाया और बहुत विनय से सेवा की। जब वह क्षुल्लक जी को आहार दे रही थी तो क्षुल्लकजी ने माया से सारा आहार मुख से बाहर निकाल दिया जिससे चारों ओर दुर्गन्ध फैल गई। रानी रेवती ने शांतिपूर्वक गंदगी को साफ किया और अत्यंत दुःखी होकर कहा कि शायद मेरे द्वारा आहार में असावधानी हो गई होगी।

इसके बाद क्षुल्लकजी ने अपनी माया को समाप्त करके उन्हें आशीर्वाद दिया और उनके दृढ़ श्रद्धान की प्रशंसा की। राजा वरुण ने अपने पुत्र शिवकीर्ति को राज्य देकर मुनि दीक्षा अंगीकार कर ली और समाधि पूर्वक मरण कर माहेन्द्र स्वर्ग में देव हुये। रानी रेवती ने आर्यिका दीक्षा लेकर तप किया और ब्रह्म स्वर्ग में देव हुई।

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें जिनधर्म का दृढ़ता से पालन करना चाहिये और चाहे किसी प्रकार का लोभ मिले अथवा संकट आयें, हमें धर्म नहीं छोड़ना चाहिये।

साभार – जैन धर्म की कहानियाँ

समझाया और उस ब्रम्हा की महिमा बताई परन्तु रानी का श्रद्धान नहीं डगमगाया । वह सबसे यही कहती रही कि भगवान आदिनाथ को मोक्षमार्ग बताने के कारण आदिब्रह्मा कहा जाता है। कोई दूसरा ब्रह्मा हो ही नहीं सकता। जिनागम में कहा है – नारायण नौ होते हैं, रुद्र ग्यारह होते हैं और तीर्थंकर चौबीस ही होते हैं फिर ये नये देव कौन हैं? यह अवश्य ही कोई मायावी है । मैं इसे किसी कीमत पर वन्दन नहीं करूँगी।

दूसरे दिन क्षुल्लकजी ने नागशय्या पर विराजमान विष्णु भगवान का रूप बनाया । उसके चारों हाथ में शस्त्र थे। सारा नगर फिर दर्शन करने चला गया और बोले कि मथुरा का भाग्य खुला है आज स्वयं भगवान विष्णु पधारे हैं। लेकिन रानी रेवती अपने घर बाहर भी नहीं निकली।

फिर चन्द्रप्रभ ने नया रूप बनाया । उनका बीमारी से शरीर गल रहा था । रानी रेवती के महल के पास जाकर क्षुल्लक जी ने माया से बेहोश होने का भ्रम किया । रेवती रानी को जब समाचार मिला तो उसने आकर भक्तिपूर्वक नमस्कार किया और उन्हें सेवकों से आराम से उठवाकर ले आई । महल में उनका इलाज करवाया और बहुत विनय से सेवा की । जब वह क्षुल्लक जी को आहार दे रही थी तो क्षुल्लकजी ने माया से सारा आहार मुख से बाहर निकाल दिया जिससे चारों ओर दुर्गन्ध फैल गई । रानी रेवती ने शांतिपूर्वक गंदगी को साफ किया और अत्यंत दुःखी होकर कहा कि शायद मेरे द्वारा आहार में असावधानी हो गई होगी।

इसके बाद क्षुल्लकजी ने अपनी माया को समाप्त करके उन्हें आशीर्वाद दिया और उनके दृढ़ श्रद्धान की प्रशंसा की । राजा वरुण ने अपने पुत्र शिवकीर्ति को राज्य देकर मुनि दीक्षा अंगीकार कर ली और समाधि पूर्वक मरण कर माहेन्द्र स्वर्ग में देव हुये । रानी रेवती ने आर्यिका दीक्षा लेकर तप किया और ब्रह्म स्वर्ग में देव हुई।

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें जिनधर्म का दृढ़ता से पालन करना चाहिये और चाहे किसी प्रकार का लोभ मिले अथवा संकट आयें, हमें धर्म नहीं छोड़ना चाहिये।

साभार – जैन धर्म की कहानियाँ

बनाओ

राजू – मम्मी ! नींबू काट दो।

मॉ – नहीं बेटा ! काटो नहीं, बना लो बोलो।

राजू – क्यों मम्मी ?

माँ – बेटा ! गाय काटी जाती है।
मुर्गा काटा जाता है।
बकरा काटा जाता है।
काटो शब्द से हिंसा का पाप लगता है।
हम काटते नहीं शोधते हैं
हम काटते नहीं बनाते हैं।

राजू – अच्छा मम्मी ! समझ गया।

माँ – समझ गये तो बताओ और क्या खाओगे ?

राजू – मम्मी ! आम बनाओ, मैं आम भी खाऊँगा।
मम्मी ! ककड़ी शोध दो, मैं ककड़ी भी खाऊँगा ।

मॉ – शाबास राजू बेटा।

– ब्र. सुमतप्रकाश जी

सावधान !!

"बोन चायना" क्राकरी

हड्डियों से बनती है .....

– संकलनकर्ता : संदीप कुमार जैन

सामान्यतया क्राकरी की दुकान पर हम चीनी–मिट्टी के कप खरीदने जाते हैं एवं वहां पर हम ''बोन–चायना'' कप–प्लेट आदि भी पाते हैं जिससे हमें यह भ्रम हो जाता है कि ये भी पार्सेलीन (चीनी–मिट्टी) के बनते होंगे परन्तु सावधान ऐसा नहीं है .....

बोन का अर्थ है हड्डी। बोन चायना भी एक पार्सेलीन जैसा पदार्थ है जो सर्वप्रथम ब्रिटेन में बैलों की हड्डीयों से प्राप्त पाउडर के एक बड़े भाग को प्रयुक्त कर बनाया गया था। जो कि कुछ मात्रा में पारदर्शीपन व सफेदी लिए हुए रहता है यह किस प्रकार किया जाता है आइए जाने .....

थामस फ्रेय ने 1748 में बो चायना तर्क में हड्डीयों के पाउडर का उपयोग किया। सन 1800 में जोशीह स्पोड ने चीनी– मिट्टी को प्रचलित किया जो चीन से ब्रिटेन में मंगवायी जाती थी और उसे केओलीन और चीनी–पत्थर के साथ मिलाकर प्रयुक्त किया जाता था। बाद के वर्षों में यह अनेक देशों में बनाये जाने लगे। मिन्टन, कोलापार्ट, डेवनपोर्ट, डर्बी, वार्सेस्टर, न्यू हाल, वेजवुड, रॉकिघंम, आदि अनेको कम्पनियां इसे बनाती है

बोन चायना क्रॉकरी की कीमत चीनी–मिट्टी की क्राकरी से ज्यादा होती है क्यों ? इसे बनाने के लिए कत्लखानों से टनों हड्डीयाँ खरीदी जाती है, उसे साफ किया जाता है और खुले में जलाया जाता है अन्यथा हड्डी के बिना बोन चायना नाम नहीं दिया जा सकता। पशुओं की हड्डीयों पर सर्वप्रथम उसके मांस को हटाया जाता है। इसके बाद इसे गर्म किया जाता है और सरेस जैसे लसलसे पदार्थ को अलग किया जाता है जिसका उपयोग महंगे काज के निर्माण में होता है तत्पश्चात हड्डियों से निकले पदार्थ को 1000° C तक गर्म किया जाता है जिससे बचे हुए कार्बनिक पदार्थ भी जल जाते हैं। इसके बाद इन्हें सांचों में ढाला जाता है और अंत में मजबूती के लिए अग्नि में पकाया जाता है।

'पार्सेलीन (चीनी-मिट्टी) की क्रॉकरी और ''बोन-चायना'' क्राकरी में एक महत्वपूर्ण अंतर यह है कि बोन चायना मंहगा होता है, सफेदी लिए हुए रहता है और उसमें पारदर्शिता लिए हुए रहता है यदि आप इस क्राकरी को अपने हाथ में लेकर देखें तो अपनी अंगुलियों को आर-पार देख सकते हैं। जितनी मंहगी क्राकरी है उसमें हड्डी पाउडर का प्रतिशत उतना ही ज्यादा होगा। क्या एक शाकाहारी, सात्विक अहिंसक मनुष्य को बोन-चायना प्रयुक्त करना चाहिए ? सिर्फ एक शाकाहारी ही नहीं प्रत्येक मनुष्य को इसके प्रयोग से बचना चाहिए। इस संबंध में जो लोग तर्क करते है कि पशुओं को मात्र हड्डियों के लिए नहीं मारा जाता ? परन्तु आप जानते हैं कि उन्हें इसके लिए मरना होता है। भारत में करोड़ों भैसों गायों बैलों को सिर्फ हड्डियों एवम् चमड़े के लिए मारा जाता है। उनका माँस खाने के लिए नहीं ।

वर्क फैक्ट्री में बड़े पैमानों पर गायों की उनकी आँतों के लिए हत्या की जाती हैं। आपने उन्हें नहीं मारा है परन्तु आप वस्तुओं को खरीद कर उनकी हत्या को प्रोत्साहित कर रहे हैं। यदि मांग नहीं होगी तो उसका उत्पादन भी नहीं होगा।

शाकाहारी अहिंसक होने के नाते आपसे यह अपेक्षा की जाती है कि आप उनकी मांग नहीं करें, पशुओं की हिंसा, उनके शोषण को रोकने में सहायक बने । अधिकांश दवाईयों को बनाने के लिए उन्हें बेगुनाह, निरीह पशुओं पर प्रयोग के बाद उत्पादित किया जाता है । उसे बनाने में पशुओं के टिश्यू आदि प्रयुक्त किये जाते हैं। परन्तु बोन-चायना का उपयोग तो बिल्कुल ही अनावश्यक है इसके विकल्प भी उपलब्ध हैं।

आप ही अपने ड्राइंग रुम, साज- सज्जा कक्ष से बोन-क्राकरी को हटाकर तालाब में फेंक दीजिए। वर्तमान में ऐसी कम्पनियां है जो बोन-चायना के स्थान पर अन्य रासायनिक पदार्थ जैसे फास्फोरिक अम्ल, लाईम, कैल्शियम, फॉस्फेट आदि का उपयोग कर इसका विकल्प प्रस्तुत कर रही हैं।

कृपया पशुओं के प्रति संवेदनशील बने और उनसे बने उत्पादों का प्रयोग बंद करें।

साभार - मेनका गांधी

Kashaya

Kashaya is my name !
To harass is my only aim !!
With world soul I remain,
Muktipuri! just can't sustain !
To harass is my only aim !
Kashaya is my name !!
To find peace with me is difficult,
To expect me to surrender is insult ?
Straightforwardness is me is difficult,
To control my wants is
To harass is my only aim!!
With angry men I stay,
To egoists I do give way,
In deceitful people I stay,
With greedy too I may.
To harass is my only aim !
Kashaya is my name !

Dr. Shuddhadma Prabha

हमारे तीर्थ क्षेत्र-

पिसनहारी की मढ़िया

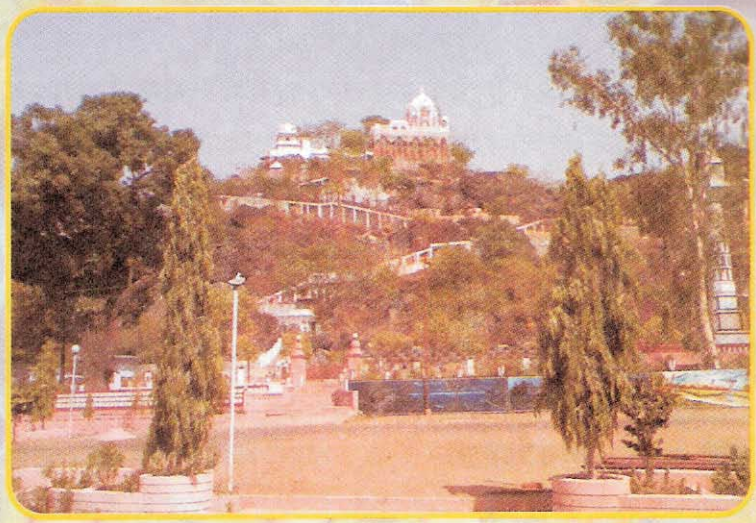

यह पिसनहारी की मढ़िया तीर्थ क्षेत्र है। यह मध्यप्रदेश के जबलपुर नगर में स्थित है। यहां जमीन से 300 फीट की ऊँचाई के पर्वत पर भव्य जिन मंदिर है। इसकी रचना लगभग 650 वर्ष पूर्व गौड़ राज्य काल में हुई थी। लगभग 18 एकड़ की विशाल भूमि पर निर्मित इस क्षेत्र में अद्‌भुत नंदीश्वर दीप एवं विशाल मानस्तंभ विराजमान है। इस क्षेत्र के बारे में एक कथा प्रचलित है कि एक गरीब बूढ़ी माँ ने जिन मंदिर निर्माण के लिये अपने हाथों से चक्की द्वारा अनाज पीसकर पैसा इकट्‌ठा किया और छोटा सा जिन मंदिर निर्माण किया उसके पश्चात् समाज के सहायोग से विशाल क्षेत्र का निर्माण हो गया।

यहां आवास हेतु पर्याप्त सुविधायें उपलब्ध है। यह पावन क्षेत्र जबलपुर - नागपुर राजमार्ग पर स्थित है इसके समीप कोनीजी - 40 कि.मी., बहोरीबंद-75 कि.मी., कुंडलपुर-135 कि.मी. अमरकंटक - 235 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

बाजार की चाय का सच

कई लोग कहते हैं कि उस चाय वाले की चाय में क्या स्वाद है। उस चाय वाले की चाय में तो जादू है। जब तक उसकी चाय न पियो तब तक मजा ही नहीं आता। कितनी भीड रहती है उसके यहाँ। आदि वाक्य आपको सुनने मिलते होंगे। परन्तु क्या आप जानते हैं इसका रहस्य क्या है? आइये हम आपको बताते हैं। अधिक रुपये कमाने की लालच मेंचाय वाले थोडी सीअफीम और चूना मिला रहे हैं। नागपुर के एक चाय बेचने वाले को अफीम मिलाते हुये पकडा गया तो उसने नागपुर ही छोड दिया। उसने बताया कि वह लगभग 10 चाय की दुकानों में काम कर चुका है और जिनमें से 8 चाय वाले अफीम मिलाते थे। देश के लगभग अधिकांश चाय वाले अपनी बिक्री बढाने के लिये अफीम और चूने का प्रयोग वर्षों से कर रहे हैं।

क्या होता है अफीम से - वैसे तो चाय में निकोटिन का नाम पदार्थ होता है जिससे बार-बार चाय पीने की इच्छा होती है और अफीम चाय के स्वाद को बढाकर तलब बढा देती है। कई बार ऐसा लगता है कि चाय पतली है उसमें पानी अधिक लगता है और कई बार चाय गाढी लगती है जैसे दूध अधिक डाला गया हो। यह कमाल दूध का नहीं बल्कि चूने का है। चूना चाय को गाढ़ा कर स्वाद भी बढ़ा देता है।

मिलावट कैसे होती है - यह मिलावट बहुत सावधानी से होती है। अफीम बहुत कम मात्रा में चाय में मिलाई जाती है जिसे पकडना कठिन होता है। कई जगह बनती हुई चाय में अफीम मिलाई जाती है

और कई जगह चायपत्ती में ही मिला दी जाती है। कई बार एक ही दुकान में दो तरह का चाय का स्वाद देखने में मिलता है। जब चाय अच्छी नहीं लगती तो दुकानदार कहता है कि चाय पक नहीं पाई सच्ची बात तो यह है उसे अफीम या चूना मिलाने का मौका नहीं मिला।

डाक्टर कहते हैं- अफीम का सेवन कम मात्रा में हो या ज्यादा शरीर पर इसका विपरीत असर पडता है। इससे शरीर कमजोर पडता है और साथ ही कई बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं। व्यक्ति नींद नहीं आती, बैचेनी रहती है, उसे नशे की लत पड़ जाती है। ऐसी स्थिति में एच.आई.वी. वायरस होने की संभावना बढ़ जाती है। परन्तु चूने के सेवन से शरीर में मामूली सा विपरीत असर होता है।

क्या आप अब भी बाजार में चाय पीयेंगे या नहीं - निर्णय आप पर है।

One two - Mithyatva udan choo
Three Four - Sansar no more
Five six - Moksha now fix
Sevan Eight - Karma out of date
Nine ten - Dharma is sukh den.

- By Prasant pradeep jain, Nasik

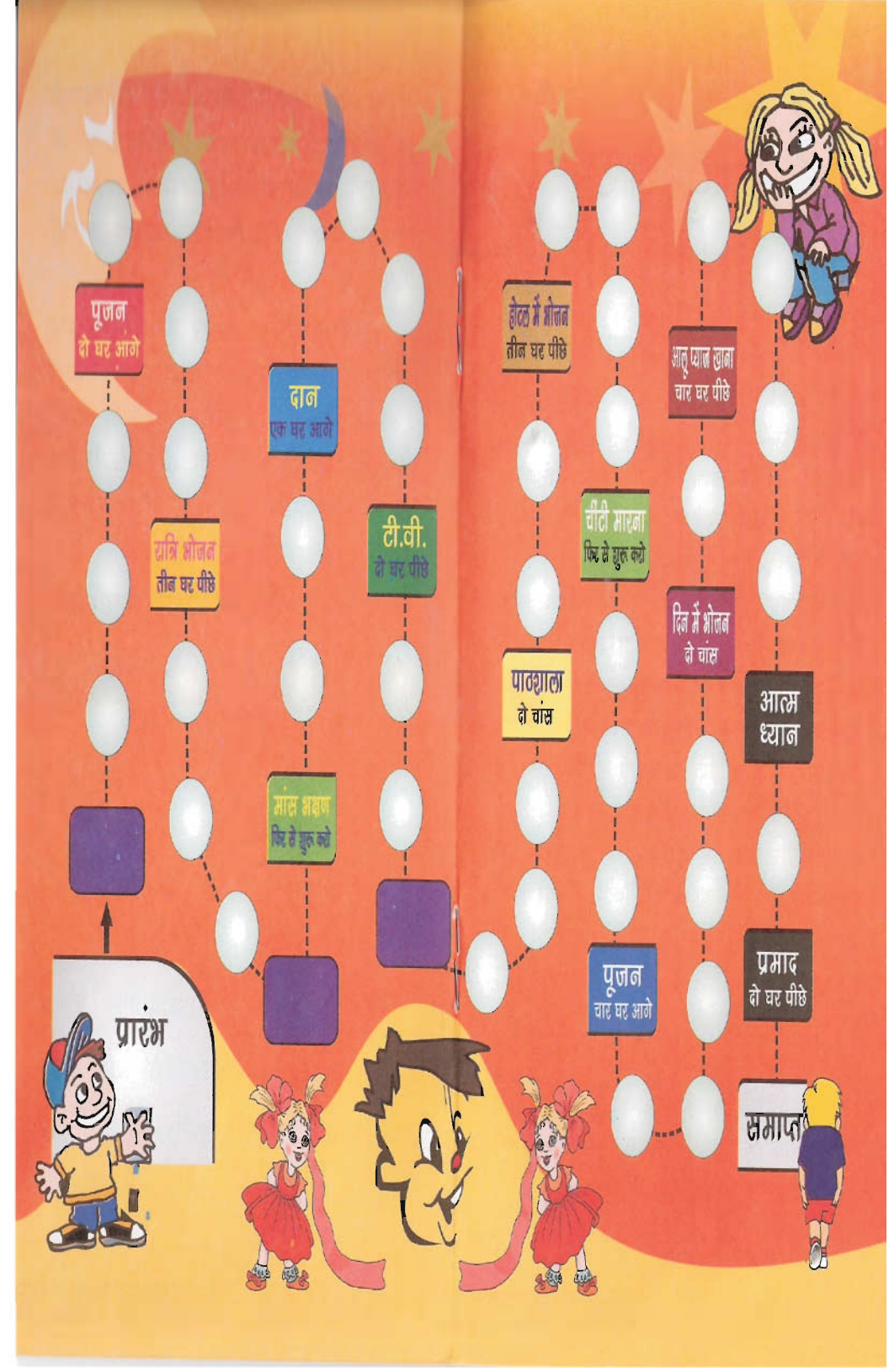
प्रारंभ
पूजन
दो घर आगे
रात्रि भोजन
तीन घर पीछे
दान
एक घर आगे
टी.वी.
दो घर पीछे
मांस भक्षण
फिर से शुरू करो
होटल में भोजन
तीन घर पीछे
पाठशाला
दो चांस
चींटी मारना
फिर से शुरू करो
पूजन
चार घर आगे
आलू प्याज खाना
चार घर पीछे
दिन में भोजन
दो चांस
आत्म
ध्यान
प्रमाद
दो घर पीछे
समाप्त

प्रेरक प्रसंग

साधु का डर

एक साधु महात्मा और उसका शिष्य जंगल की एक झोपडी में रहते थे। रोज रात को साधु अपने शिष्य को कहता कि बडा डर है, जागते रहना, सो मत जाना और तकिया सिर के नीचे रखकर सो जाते थे परन्तु उन्हें नींद नहीं आती थी। शिष्य सोचता कि पता नहींसाधु को किस बात का डर है? कोई जंगली जानवर यहाँ नहीं आता और यदि चोर आयेगा तो क्या ले जायेगा? हमारे पास तो कुछ भी नहीं है फिर भी साधुजी इतना क्यों डरते हैं? लेकिन कोई बात तो है। मैं इसका पता लगाकर रहूँगा।

एक दिन साधुजी बाहर गये तो शिष्य ने उनका तकिया को छूकर देखा तो उसे उसमें कुछ भारी सामान होने की आशंका हुई। उसने खोलकर देखा तो उसमें बहुत सारा धन भरा हुआ था। उसने सारा धन कुयें में फेंक दिया और तकिया फिर से पहले जैसा बंद कर दिया। साधुजी रात को लौटे तो सोते हुये रोज की तरह शिष्य को कहा कि चेले! जागते रहना, बहुत अंधेरी रात है। तो चेला बोला – गुरुजी! आप निश्चिंत होकर सो जाइये, अब आपका डर आपके पास नहीं है। मैंने उसकी व्यवस्था कर दी है। अब वह कभी आपके पास नहीं आयेगा। साधु महाराज चौंके उन्होंने तकिया खोलकर देखा तो उसमें धन नहीं पाकर बहुत क्रोधित बोल तूने मेरा सारा कहाँ फेंक दिया। शिष्य बोला – मैं क्या करता ? इसी धन तो आपका जीवन संकट में डाल रखा था आपको एक मिनिट भी आराम नहीं करने देता था। सारा दिन तो आप मांग–मांगकर जमा करते थे और भोग भी नहीं पाते थे। अब सुख की नींद सोओ और मुझे भी सोने दो।

साधुजी भी समझ गये कि शिष्य ने जो किया वह ठीक किया। हम तो सारी धन दौलत छोडकर साधु बने थे और साधु बनने के बाद धर्म में मन लगाने के अलावा धन संग्रह में लग गया। उसने शिष्य को आशीर्वाद दिया।

विषय आसक्ति का फल

एक राजा को प्रतिदिन अपने बिस्तर पर फूल बिछाकर सोने की आदत थी। उसके बगीचे की देखभाल करने वाली मालिन प्रतिदिन ताजे फूल तोड कर बिस्तर पर बिछाती थी। एक दिन फूल बिछाते समय उसके मन विचार आया कि आज देखूँ कि इस फूलों के बिस्तर पर सोने से कैसा आनंद आता है जिस पर राजा रोज आराम करता है। ऐसा विचार कर वह बिस्तर पर लेट गई। दिन भार की थकान के कारण उसे नींद आ गई।

जब राजा आया उसने अपने बिस्तर पर मालिन को आराम करते देखकर बहुत क्रोधित हुआ। उसने अपने सैनिकों को आदेश दिया कि मालिन को 50 कोडे मारे जायें। सैनिक आदेश के अनुसार कोडे मारने लगे परन्तु वह मालिन रोने की बजाय हंस रही थी। जब कोडे की मार समाप्त हो गई तो उदास हो गई। राजा ने अत्यंत आश्चर्य से इसका कारण पूछा। तब मालिन ने बताया कि मैं इसलिये हंस रही थी कि मेरी सजा हर कोडे की मार के साथ समाप्त हो रही थी और दूःखी इसलिये कि मुझे मात्र कुछ समय सोने के कारण 50 कोडों की मार पडी। मेरे महाराज! लेकिन आपका हाल क्या होगा? क्योंकि आप तो प्रतिदिन इस फूलों के बिस्तर पर विश्राम करते हैं।

मालिन की इस बात पर राजा को शिक्षा मिल गई और उसी दिन से फूलों का बिस्तर छोडकर सदाचारमय जीवन व्यतीत करने लगा।

धम्मक-धम्मक आता हाथी

धम्मक धम्मक आता हाथी,
धम्मक-धम्मक जाता हाथी
मुनि के दर्शन करता हाथी,
सम्यग्दर्शन लेता हाथी
देख-देखकर चलता हाथी,
जीव की रक्षा करता हाथी
शील धरम को पाले हाथी,
सूखे पत्ते खाता हाथी
अंदर में क्या करता हाथी,
यह तो नहीं बताता हाथी
धम्मक-धम्मक आता हाथी,
देव गति में जाता हाथी।

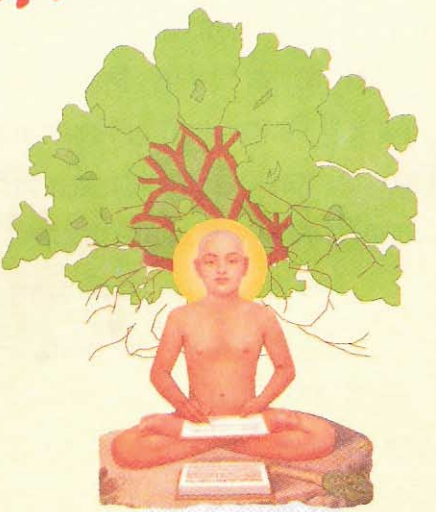

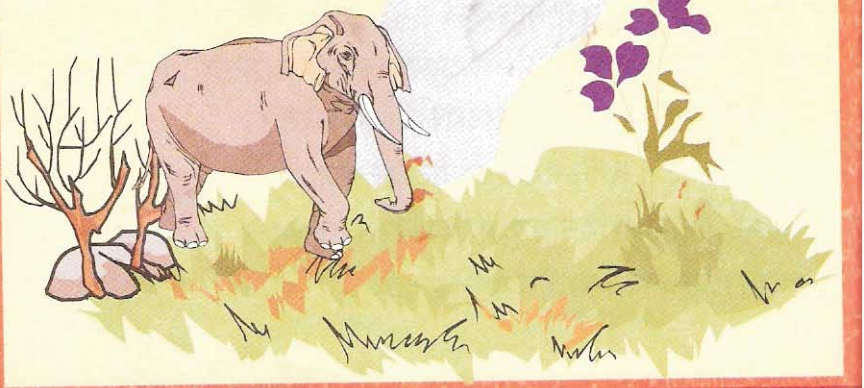

अंतर ढूंढिये

OUR TIRTHANKARS

Sr. Tirthankar's Name	Emblem	चिन्ह	Place of Nirvan
1. Rishavnath or Adinath	Bullock	वृषभ	Mount Kailash
2. Ajitnath	Elephant	हाथी	Sammed Shikhar (Jharkhand)
3. Sambhavnath	Horse	घोड़ा	Sammed Shikhar (Jharkhand)
4. Abhinandannath	Monkey	बंदर	Sammed Shikhar (Jharkhand)
5. Sumatinath	Curlew	चकवा	Sammed Shikhar (Jharkhand)
6. Padamprabh	Red Lotus	लाल कमल	Sammed Shikhar (Jharkhand)
7. Suparashvanath	Swastik	स्वास्तिक	Sammed Shikhar (Jharkhand)
8. Chandraprabh	Crescent	अर्धचन्द्र	Sammed Shikhar (Jharkhand)
9. Pushpadant	Crocodile	मगर	Sammed Shikhar (Jharkhand)
10. Shitalnath	Wish-yielding tree	कल्पवृक्ष	Sammed Shikhar (Jharkhand)
11. Shreyansnath	Rhinoceros	गैंडा	Sammed Shikhar (Jharkhand)
12. Vasupujya	Buffalo	भैंसा	Champapur (Bihar) Mandar

OUR TIRTHANKARS

Sr. Tirthankar's Name	Emblem	चिन्ह	Place of Nirvan
13. Vimalnath	Pig	सूकर	Sammed Shikhar (Jharkhand)
14. Anantnath	Porcupine	सेही	Sammed Shikhar (Jharkhand)
15. Dharamnath	Thunderbolt	वज्रदण्ड	Sammed Shikhar (Jharkhand)
16. Shantinath	Dear	हिरण	Sammed Shikhar (Jharkhand)
17. Kunthnath	He-got	बकरा	Sammed Shikhar (Jharkhand)
18. Arahnth	Fish	मछली	Sammed Shikhar (Jharkhand)
19 Mallinath	Water pot	कलश	Sammed Shikhar (Jharkhand)
20 Munisubratnath	Tortoise	कछुआ	Sammed Shikhar (Jharkhand)
21. Naminath	Blue Lotus	नीलकमल	Mount Giranar (Gujrat)
22. Neminath	Conch Shell	शंख	Sammed Shikhar (Jharkhand)
23. Parasavanath	Serpent	सर्प	Sammed Shikhar (Jharkhand)
24. Mahavir Swami	Lion	सिंह	Pavapur (Bihar)

कविता

नये वर्ष पर क्या हुआ

क्या हुआ भाई क्या हुआ
नये वर्ष पर क्या हुआ

नये वर्ष पर वही पुरानी बात है
वही लोग हैं वही संग है, वही हमारा साथ है
फिर बतलाओ क्या हुआ
क्या हुआ-क्या हुआ ?

वही कषायें, वही पाप हैं, वही हिंसा का खेल है
नये वर्ष तो कितने आये, धुला न मन का मैल है
तो फिर नया क्या हुआ ?
क्या हुआ-क्या हुआ ?

कल जैसी अंधियारी और कल जैसा दिन आज है
नहीं रुके कोई काम किसी के, नई जैसी क्या बात है ?
तो किसका उत्सव मनायें हम सब, बतलाओ क्या नया हुआ
क्या हुआ-क्या हुआ ?

नये वर्ष स्वागत करना है तो आओ कोई नई बात कहो,
पाप और कषायें कम हों, निज आतम की बात सुनो;
यदि विशुद्धि बढ़े मन की तो समझो कुछ नया हुआ ॥
नये वर्ष पर क्या हुआ ?

नाटक - अब नहीं मनाउंगा

- हैप्पी न्यू ईयर दीप।
- किस बात का हैप्पी न्यू ईयर नवीन।
- क्या पागल हो गये हो या मजाक कर रहे हो
- न ही पागल हुआ हूँ न ही मजाक कर रहा हूँ
- तो क्या तुम्हें नहीं मालूम आज नया वर्ष है। आज 1 जनवरी है। मुझे सब मालूम है दीप । यदि दुनिया पागलपन कर रही है तो हम भी पागलपन करें।
- क्या बात कर हो मुझे तो कुछ समझ में नहीं आ रहा। मुझे तो तुम पागल लग रहे हो। पागलखाने से आ रहे हो क्या ?
- पागल मैं नहीं, नया वर्ष मनाने वाले हैं। जो हमारा पर्व न हो उसे मनाना पागलपन नहीं तो और क्या ? नये वर्ष के नाम पर पागलों जैसा नाचना, पटाखे फोडना, होटलों में जाना - ये कहाँ की बुद्धिमानी है।
- मैं कुछ समझा नहीं।
- अरे भाई ! हम जैनों का नया वर्ष भगवान महावीर के निर्वाण दिन अर्थात् दीपावली के बाद से प्रारंभ हो गया था। 1 जनवरी का नया वर्ष तो अंग्रेजी सभ्यता की देन है।
- तो क्या हुआ? हम उनका नया वर्ष नहीं मना सकते क्या ?
- मैंने कब मना किया? मैं तो बस यह पूछ रहा हूँ कि नया वर्ष में क्या हुआ जो इतना उत्साह है।
- अरे आज से नया वर्ष प्रारंभ हो रहा है और हम नये और अच्छे कार्य करने की प्रतिज्ञा लेंगे।

- मुझे समझ में नहीं आता कि 31 दिसम्बर और 1 जनवरी में क्या अंतर आ गया है। चारों तरफ वही आतंकवाद, बम विस्फोट, अत्याचार और झूठ है। हममें भी क्या अंतर आया है? वही व्यापार, पाप-कषाय की बातें।
- हाँ ये बात तो है ....!
- नया कुछ तो हो जिससे हमें बधाई देने का अवसर मिले। न हमारे पाप कम होते हैं न ही कषायें।
- नया काम तो भगवान महावीर ने किया था मोक्ष में जाने का। तभी तो हमें खुशियाँ मनाने का अवसर मिला था।
- तो हमें क्या करना चाहिये
- यदि हमें नया वर्ष मनाना ही है तो सबसे पहले जिनमंदिर जाकर पूजन-आराधना करना चाहिये और प्रतिज्ञा करना चाहिये कि आज से पापों से बचने का प्रयास करेंगे। अपना मन अधिक से अधिक जिनधर्म के अध्ययन में, जिनेन्द्र भगवान की पूजन में, विशुद्धि बढाने में लगायेंगे। अभक्ष्य भक्षण और रात्रि भोजन त्याग करेंगे। तभी होगा कुछ नया।
- हाँ भाई! मैं ही पागल था। अब मैं भी तुम्हारी तरह नया वर्ष मनाउंगा।
- तो बोलो हैप्पी न्यू ईयर।

तत्वज्ञान की समता

एक सेठ जी स्वाध्याय सुनने के लिये सबसे पहले आते और सबसे अंत में जाते। एक दिन उनका एक बच्चा मर गया, जिससे वे उस दिन स्वाध्याय में नहीं पहुँच सके। बच्चे को श्मशान घाट ले जाना पड़ा। तीसरे दिन स्वाध्याय में पहुंच सके।किसी ने पूछा - कल आपकी अनुपस्थिति कैसे रही ? सेठ जी ने उत्तर दिया - एक पड़ोसी घर में आया था, कल उसे विदा करने जाना पड़ा इसलिये नहीं आ सका।

अभिप्राय का फल

हम सोचते है कि हम जैसा कार्य करते है हमें उसका वैसा फल मिलेगा कोई भक्ति, पूजन, दान करता है और मानता है कि इससे मुझे बहुत पुण्य मिलेगा और किसी को चोरी, हत्या, गाली देते हुये हम देखते है तो हमें लगता है कि उसे बहुत पाप लगेगा लेकिन हमें उसके अभिप्राय का विचार नहीं रहता। कोई व्यक्ति कोई भी काम किस कारण से करता है उस कारण के अनुसार फल मिलता है।

एक गांव में दो चोर रहते थे। दोनों पक्के मित्र थे चोरी के धन से अपना जीवन यापन करते थे। एक बार उनके गांव में एक बड़े विद्वान पधारे। सारा गांव उनके प्रवचन सुनने के लिये जाने लगा। वे विद्वान जैन धर्म का रहस्य बतलाते थे उनकी रोचक शैली से सभी गांववासी मोहित होने लगे। एक चोर को मालूम हुआ कि गांव में विद्वान पधारें है। उसने अपने मित्र चोर से कहा कि मित्र आज मैं जिन मंदिर में प्रवचन सुनने जाऊँगा। दूसरा चोर बोला – तुझे भी पंडित बनना है क्या ? अपना काम चोरी करना है सत्संग करना नहीं। पहला चोर बोला – हमने चोरी तो कई बार की है परंतु आज तक धर्म की बात नहीं सुनी, आज तो मैं मंदिर ही जाऊँगा। दूसरा चोर बोला – बड़ा आया धर्म–कर्म करने वाला। तू जा मंदिर सारा गांव जब मंदिर जायेगा तो मैं बड़े आराम से चोरी करुंगा।

पहला चोर मंदिर गया उसे पंडित जी के द्वारा किये जा रहे प्रवचन समझ में नहीं आये वहां तो आत्मा से परमात्मा होने की बात चल रही थी। उसने सोचा –मैं व्यर्थ में मंदिर आ गया पता नहीं कैसी – कैसी बातें कर रहे हैं पंडित जी। काश मैं चोरी करता तो कम से कम धन का लाभ तो होता। दूसरा चोर चोरी करने गया और चोरी करते–करते सोचने लगा मेरा मित्र सच ही कह रहा था चोरी करना वैसे भी अच्छा काम नहीं है वो तो मंदिर में पंडित जी के प्रवचन का लाभ ले रहा होगा और मैं अभागी चोरी करने आ गया काश मैं भी मंदिर जाता।

अचानक दोनों की मृत्यु हो गई पहला वाला चोर मरकर नरक चला गया और दूसरा चोर जो चोरी कर रहा था वह मरकर स्वर्ग गया इससे सिद्ध होता है कि फल तो अपने परिणामों और अभिप्राय का मिलता है अतः हम कोई भी अच्छा कार्य करें उसे अच्छे परिणाम ओर अच्छे अभिप्राय से करना चाहिये।

रंग भरो

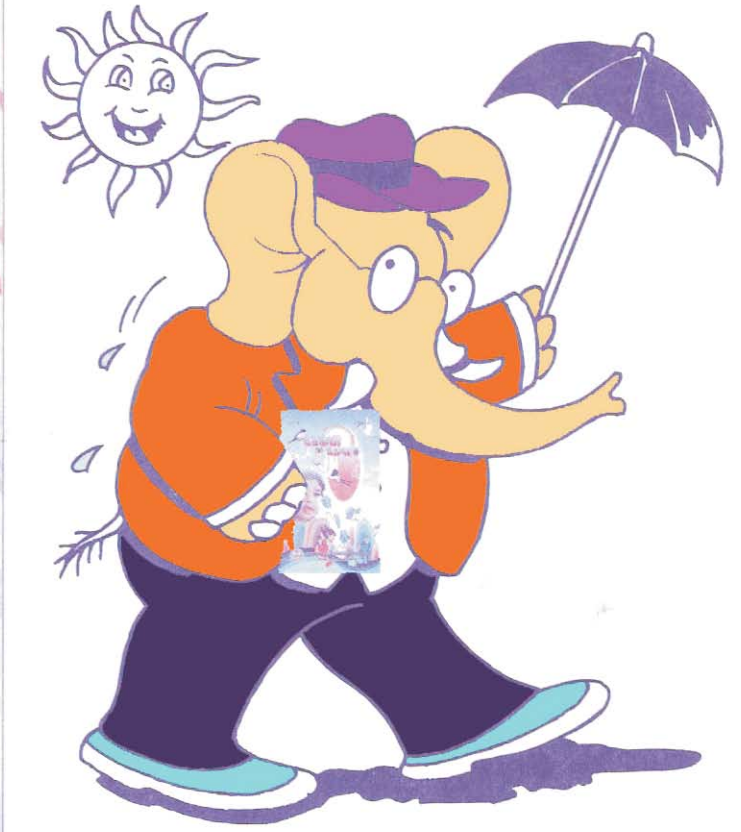

आपके प्रश्न हमारे उत्तर

प्रश्न-1 समवशरण में भगवान जब बोलते हैं तो क्या उनका मुख हिलता है?

उत्तर- भगवान का मुख नहीं हिलता बल्कि उनके सर्वांग से दिव्यध्वनि खिरती है।

प्रश्न-2 क्या भोगभूमि में चारित्र होता है?

उत्तर- भोगभूमि में भोगमय जीवन होता है। वहाँ चारित्र का नाम भी नहीं। वहाँ कल्पवृक्षों से सब भोग की सामग्री मिल जाती है। चारित्र कर्मभूमि में ही होता है।

प्रश्न-3 क्या सूर्य चन्द्रमा उर्ध्व लोक में हैं?

उत्तर- नहीं। सूर्य चन्द्रमा मात्र मध्यलोक में ही हैं।

प्रश्न-4 क्या दही में सफेद जीव पाये जाते हैं?

उत्तर- यदि दही कच्चे दूध का जमाया जायेगा तो वह त्रस जीवों का पिण्ड होगा। दूध पूरी तरह से गर्म करके 24 घंटे के भीतर जमाया जाये तो उसमें जीव नहीं होते। दूध गर्म होने के बाद 24 घंटे तक उसमें जीव उत्पन्न नहीं होते।

प्रश्न-5 चौथे काल में सर्वप्रथम मोक्ष कौन गया था?

उत्तर- भरत के भाई अनन्तवीर्य ने भगवान आदिनाथ से दीक्षा प्राप्त कर सर्वप्रथम मोक्ष प्राप्त किया था। महापुराण में इसका उल्लेख मिलता है।

यदि आपके मन में किसी भी प्रकार का कोई प्रश्न हो तो आप हमें लिख भेजें हम उसका उत्तर प्रकाशित करेंगे।

Painting

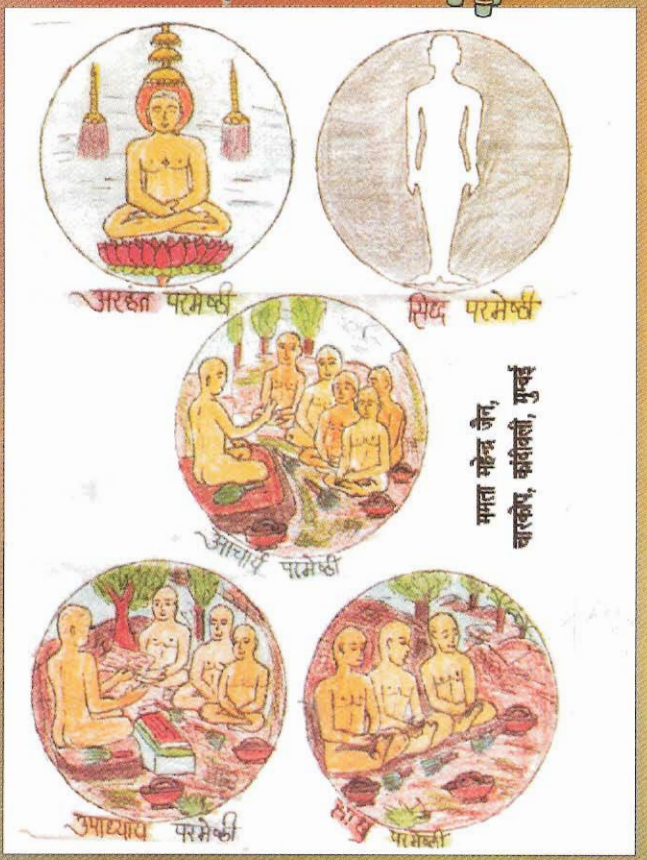

अरहंत परमेष्ठी
सिद्ध परमेष्ठी
आचार्य परमेष्ठी
उपाध्याय परमेष्ठी
परमेष्ठी
ममता महेन्द्र जैन,
चारकोप, कांदिवली, मुम्बई

आपके ब्रश से

" कपट न कीजे कोय, चोरन के पुर ना बसै।
सरल सुभावी होय, ताके घर बहु संपदा॥"

चोर का वैराग्य

संकलन– निशंक जैन, सिंगोड़ी

साथियो! बहुत दिन हो गये चोरी करते करते, आज तक मोटा माल हाथ नहीं लगा। आज तो चोरी करने के लिये राजमहल में चलेंगे। मैं महल के अन्दर जाऊंगा और तुम लोग बाहर सावधान रहना।

जैसी आज्ञा सरदार जी।

मृदुमति व अन्य चारों चोर राजमहल में पहुंचे। एक कमरे में राजा नंदिवर्धन व उनकी रानी अपने पलंग पर लेटे थे। मृदुमति वहीं जा कर छिप गया और सुनने लगा उनकी बातें...

प्रिये! आज मैंने मुनिराज से धर्मोपदेश सुना। मुझे संसार, शरीर भोगों से वैराग्य हो गया है। अब तो मैं अवश्य ही मुनि दीक्षा लूंगा। तुम शोक मत करना!

नाथ! मेरा क्या होगा, कुछ तो सोचो।

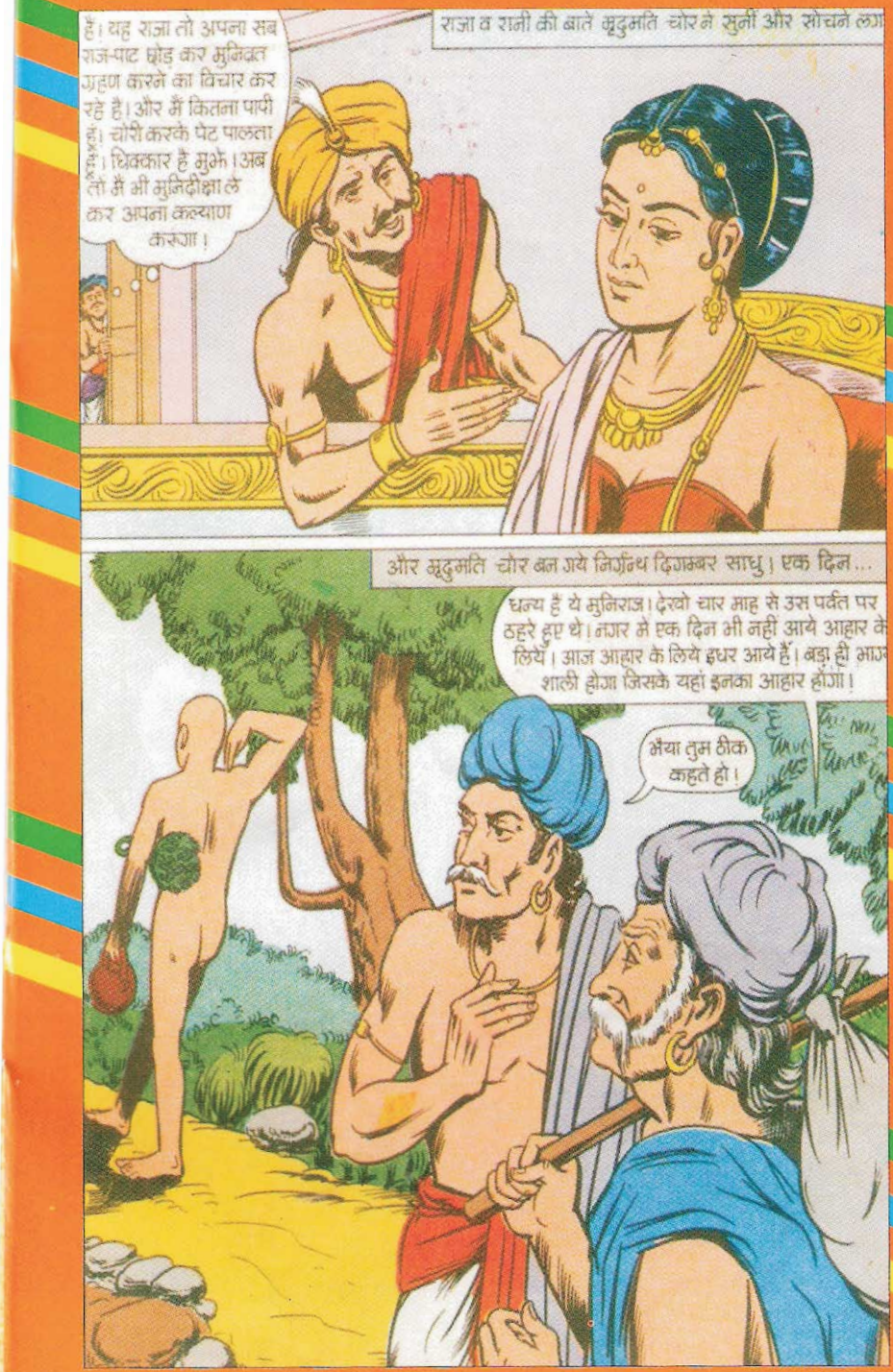

राजा व रानी की बाते मृदुमति चोर ने सुनी और सोचने लगा
हैं। यह राजा तो अपना सब राज-पाट छोड़ कर मुनिव्रत ग्रहण करने का विचार कर रहे है। और मैं कितना पापी हूं। चोरी करके पेट पालता हूं। धिक्कार है मुझे। अब तो मैं भी मुनिदीक्षा ले कर अपना कल्याण करूगा।

और मृदुमति चोर बन गये निर्ग्रन्थ दिगम्बर साधु। एक दिन...
धन्य हैं ये मुनिराज। देखो चार माह से उस पर्वत पर ठहरे हुए थे। नगर मे एक दिन भी नहीं आये आहार के लिये। आज आहार के लिये इधर आये हैं। बड़ा ही भाग्य शाली होगा जिसके यहां इनका आहार होगा।
भैया तुम ठीक कहते हो।